भाषाविदों के विहंगम दृष्टि में पवारी/पोवारी बोली

पवारी / पोवारी बोली महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ निवासी पवार/पोवार जाति जनों की मातृभाषा है। पवारी/पोवारी बोली बुंदेली बोली का ही एक प्रकार है तथा वह हिंदी की उपभाषा मानी गई है। भाषाविदों के पवारी /पोवारी बोली पर किए गये अध्ययन से उभरे तथ्य प्रस्तुत है -

१. सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने ईसवी १८९८-१९२८ कालावधी में भारतीय १७९ भाषाओं तथा ५४४ बोलियों का सखोल अध्ययन, भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण तथा वर्गीकरण किया और "Linguistic survey of India (LSI)" के १९ खंड, शासकीय मुद्रणालय, कलकत्ता से प्रकाशित किये। वे Linguistic Survey of India vol. IX part I, pp. 565 पर लिखते हैं कि Pawari is the name for the variety of Bundeli, which is spoken in those parts of Central India in which Parmara or Pawar Rajputs are one of the principle clans."

भावार्थ - पवारी यह नाम बुंदेली के एक प्रकार की बोली का है जो मध्यभारतीय संभागों में बोली जाती है, जिसमें परमार या पवार राजपुत यह प्रमुख जाति (विद्यमान) हैं। शायद यह पहला संदर्भ है जहां हमारी बोली का नाम Pawari / पवारी तथा जाति का नाम Parmara or Pawar परमार या पवार स्पष्ट रुप से शासकीय दस्तावेज में लिखा हुआ मिलता है। आगे वे लिखते हैं कि बुंदेली की १४ उपभाषाएं - १) प्रमाणक बुंदेली, २) खटोला, ३) लोधंती, ४) पवारी, ५) बनफरी, ६) कुंदरी, ७) निभट्टा, ८) भदौरी/तोवरगढ़ी, ९) लोधीन १०) बिमदेली, ११) नागपुरी, १२) किरारी, १३) कोष्टी और १४) कुंभारी है। ग्रियर्सन अनुसार सुप्रसिद्ध 'आल्हा-खंड' महाकाव्य को बुंदेली-बनफरी बोलीभाषा में लिखा गया हैं। बुंदेली तथा पवारी, कोष्टी, लोधनी, किरारी, कुंभारी आदि में आपसी समरसता पाई जाती है क्युकि वे बुंदेली के ही विभिन्न स्वरुप हैं एवम् विभिन्न क्षेत्रों की स्थानिय भाषाओं से घुलमिलकर बदली-बदलीसी लगती हैं। दक्षिण में मराठी से ज्यादा प्रभावित हुई हैं।



डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे

ग्रियर्सन द्वारा भारतीय भाषाओं को चार प्रमुख शाखाओं में - आस्ट्रिक, तिब्बती-चीनी, द्रविड, तथा भारतीय भाषा-परिवारों में वर्गीकररण करते हुए पवारी बोली को Indo-Aryan (भारत-आर्य) भाषा की Western Hindi (पश्चिम-हिंदी) भाषा- परिवार की उपभाषा के रुप में वर्गीकरण किया है।

२. विमलेश कांति वर्मा - ने अपनी ''हिंदी और उसकी उपभाषाएं'' (प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, १९९५) पृष्ठ २५ पर भारतीय जनगणना १९६१, १९७१, तथा १९८१ के भाषा/मातृभाषा सर्वेक्षण के आधार पर हिंदी की निम्न बोलियों को (दस हजार से अधिक बोलचाल में उपयोग कर रहे जनसंख्या के अनुरुप) क्रमबद्ध सूची दी हैं - १) अवधी, २) बघेली, ३) बागड़ी-राजधानी, १२) चूराही, १३) ढूंढाड़ी, १४) गढ़वाली, १५) गोजरी, १६) हाड़ौती १७) हरियाणवी, १८) जौनसारी, १९) कांगड़ी २०) खड़ी बोली, २१) खोरथा, २२) कुलवी, २३) कुमाऊनी, २४) कुरमली थार, २५) लबानी, २६) लमानी/लम्बादी, २७) लरिया, २८) लोढी, २९) मागधी/मगही, ३०) मैथिली, ३१) मालवी, ३२)

मंडियाली, ३३) मारवाड़ी, ३४) मेवाड़ी ३५) मेवाती, ३६) नागपुरिया, ३७) निमाड़ी ३८) पडारी, ३९) पहाड़ी ४०) पंचपरगनिया, ४१) पंगवाली, ४२) पवारी/पोवारी, ४३) राजस्थानी, ४४) सदन-सदरी ४५) सोंडवारी, ४६) सुगली, ४७) सुरगुजिया, ४८) सुरजापुरी।

पवारी/पोवारी का ४२ क्रमांक १९९१,२००१ के जनगणना संलग्न मातृभाषा सर्वेक्षण में भी स्थिर रहा हैं किंतु २०११ की जनगणना संलग्न मातृभाषा सर्वेक्षण सूचि में लुढ़ककर ४९ पर आ गया।

विमलेश कांति वर्मा आगे पृष्ठ ३६ पर स्पष्ट करते हैं कि ''५०० ई.पू. में जनता की भाषा संस्कृत से दूर होती चली गई, जिसके यथेष्ठ प्रमाण मिलते हैं। इस समय से मध्यकालीन आर्यभाषा का प्रारंभ होता है।'' आगे वे लिखते है कि ''अगले ५०० वर्षो में भाषा और विकसित हुई तथा उसका नाम प्राकृत रखा गया।'' मध्यदेशीय प्राकृत, शैलशैनी प्राकृत भाषा हैं।

शैलशैनी प्राकृत से उड़िया, बंगला, असमिया, सिंधी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तथा हिंदी और उसकी उपभाषाएं उत्पन्न हुई हैं। इस आधार पर हम कह सकते हैं.कि पवारी बोली का जनम भी शैलशैनी प्राकृत से हुआ है जो सदियों तक मौखिक भाषा के रुप में विचरण करती रही।

३. पद्मश्री डॉ. गणेश देवी ने ''भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण'' (People's Linguistic Survey of India, PLSI"- 1996-2018) प्रोजेक्ट अंतर्गत ७८० भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया। उन्होंने ''भारतीय भाषांचे लोक सर्वेक्षण - महाराष्ट्र'' (भाषा संशोधन एवं प्रकाशन संस्था बडोदरा, २०१३), पृष्ठ क्रमांक १५७ पर पवारी/पोवारी बोली का परिचय प्रारंभ करते हुए स्पष्ट लिखा है कि - ''पोवारी'' ही ''पोवार'' नामक जातीत बोलली जाणारी भाषा आहे. काही ठिकाणी हा उच्चार ''पवार'' असा ही केला जातो. म्हणून ही भाषा ''पवारी'' या नावानेही ओळखली जाते.

महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश यांच्या सिमेवरील पोवार ही शेतकरी जमात आहे. पोवार समाजाच्या दोन पोटशाखा आढळून येतात. महाराष्ट्राच्या भंडारा व गोंदिया या जिल्ह्यांत आणि मध्यप्रदेशातील बालाघाट व शिवनी या जिल्ह्यात राहणारे पोवार स्वतःला क्षत्रिय पोवार समजतात तर छिंदवाडा या मध्यप्रदेशातील, रायपुर, मुलताई, भिलाई व बिलासपुर या छत्तीसगडमधील जिल्ह्यातील रहिवासी पोवार स्वतःला भोयर पोवार मानतात. विविध संघटनांकडून आता ह्या दोन शाखांचे एकीकरण होत आहे. पोवार आपले मूळस्थान मध्यप्रदेशातील इंदूर पासून ६० कि.मी. अंतरावरील धार जिल्हा हे असून आपण राजा भोज यांचे वंशज असल्याचे ते मानतात. मूळ क्षत्रिय असलेल्या पोवारांनी तिकडून या परिसरात स्थानांतरित झाल्यानंतर शेतीचा व्यवसाय स्विकारला आमि याकरिता पाण्याची सोय व्हावी म्हणून अनेक तलावही निर्माण केले. त्यांचे मूळ उत्तर भारतातील असल्याचे त्यांच्या भाषेवरून स्पष्ट होत असले तरी त्यांच्या भाषेत प्रामुख्याने मराठी शब्दांना भरणा अधिक दिसतो.''

अर्थात - ''पोवारी'' यह पोवार जाति में बोली जाने वाली भाषा है। कुछ ठिकानों में यह उच्चार पवार ऐसा भी होता है। इसलिए यह भाषा पवारी नाम से भी पहचानी जाती है।

महाराष्ट्र तथा मध्यप्रदेश की सीमा पर पोवार यह कृषक जाति है। पोवार समाज की दो पोट-शाखाएं नजर आती है। महाराष्ट्र के भंडारा तथा गोंदिया इन जिलों में और मध्यप्रदेश के बालाघाट और सिवनी इन जिलों में रहनेवाले पवार स्वयम् को क्षत्रिय पवार समझते हैं तो छिंदवाड़ा या मध्यप्रदेश, छ.ग. में रायपुर, मुलताई, भिलाई और बिलासपुर इन छत्तीसगढ़ के जिलों के रहिवासी पवार स्वयम् को भोयर पवार मानते हैं। विविध संगठनों की ओर से अब इन दोनो शाखाओं का एकीकरण हो रहा है। पवार अपना मूल स्थान मध्यप्रदेश के इंदौर से ६० कि.मि. अंतराल के धार जिला यह रहकर वे राजा भोज के वंशज होना मानते हैं। मूल क्षत्रिय रहनेवाले पवारों ने उधर से इस परिसर में स्थानांतरित होने के बाद

कृषि व्यवसाय स्विकारा और इसीलिए पानी की व्यवस्था करने अनेक तालाबों का निर्माण किया। उनका मूल उत्तर भारतीय रहने का उनकी भाषा से स्पष्ट होता है फिर भी उनकी भाषा में प्रमुखता से मराठी शब्दों का भंडार अधिक दिखाई देता है।''

४. हेमंत कुकरेती द्वारा संपादित ''भारत की लोक संस्कृति में सतपुड़ा का पवारी लोक साहित्य : एक परिचय'' अध्याय (पृष्ठ २१४-२१५) में सतपुड़ा अंचल के मध्य (बालाघाट से बैतूल) तक पवारी बोली बोली जाती है। यह बोली विगत ५० वर्षों से वाचिक साहित्य के रुप में सामने आई। वैसे यह बोली भी उतनी पुरानी है जितनी अन्य बोलियां। इस बोली का वाचिक साहित्य भी सतपुड़ांचल क्षेत्र में प्रचुरता से फैला हुआ हैं। इस अंचल में बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, गोंदिया, भंडारा, वर्धा, बैतूल जिलों के बहुतेरी जनता द्वारा बोली जाती है। पवारी का लोक-साहित्य बैतुल जिले से बालाघाट जिले तक प्रचलित हैं। यह बोली पवार समाज के मध्य धरोहर के रुप में अपनी भाषाई व सांस्कृतिक पहिचान के रुप में सुरक्षित हैं। पवारी का लोक-साहित्य १६ संस्कार, सावन गीत, घट्टीगीत, कृषि-श्रम गीत, मनोरंजन गीत, देवी जस,स भजन, लोककथा कहानी, लोरी, नाट्य गीत, मुहावरे, कहावतें पहेलियां आदि से भरा हुआ है।

५. अविक गंगोपाध्याय - ने "Glimpses of Indian Languages" (Evincepub Publishing, Bilaspur 2020) पृष्ठ क्रमांक १५४ पर पवारी/पोवारी बोली-भाषा की निम्नांकित जानकारी दी है -

Powari (pwr) madhyapradesh state : Balaghat, Betul, Chhindwara, and Seoni districts; Maharashtra State : Bhandara, Gondia and Wardha districts. Population: 326,000 (2011 Census). Ethnic population : 2,000,000 (1986 All India Powar Counciol). Status: b6*(threatened). Alternate name : Pawari, Dialects : Bhoyar Powari, (Bhomiyari, Bhoyari, Bhoyaroo, Bhuiyar, Bhuria Bohoyeri), Vyanganga Powari, Govari of Seoni, Kalari, Kosti, Kumbhari, Marari. Reported intelligibility between Bhoyar and Vyneganga varieties. Lexical similarity : 60%-87% among dialects; 80%-83% with Kosti, Kumbhari and Kalari subgroups; 49%-65% with Bagheli (bfy); 46%-64% with Bundeli (bns). Classification : Indo-European, Endo-Iranian, Endo-Aryan Intermediate Divisions Western.

उपरोक्त विवरण अनुसार भावार्थ यह है कि -

पोवारी का पर्यायी नाम पवारी है तथा भोयर-पवारी एवं वैनगंगा-पवारी यह दो बोली के प्रकार है जो करीबन ६०%-८७% समानता दर्शातें हैं। यह बोली मध्यप्रदेश के बालाघाट, बैतुल, छिंदवाड़ा तथा सिवनी जिलों और महाराष्ट्र के भंडारा गोंदिया तथा वर्धा जिलों में (२०११ जनगणना अनुसार) बोलने वालों की जनसंख्या - ३२६००० हैं। यह बी-६ असुरक्षित स्थिती में है। यह बोली ६०%-८३% कोष्टी, कुम्हारी, कलारी, ४९%-६५% बघेली तथा ४६%-६४% बुंदेली से समानता दर्शाती हैं। यह बोली इंडो-युरोपियन, इंडो-इरानियन, इंडो-आर्यन आंतरिक समुहों में वर्गीकृत की गई है।

निष्कर्ष -

१.जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (२०१६) के विवरण अनुसार पवारी बुंदेली के १४ प्रकारों (varieties) में से एक है जो मध्यभारत में बोली जाती हैं जहां परमार या पवार प्रमुख रहिवासी हैं।

२. विमलेश कांति वर्मा (१९९५) के अनुसार भारतीय जनगणना १९६१, १९७१, १९८१ संलग्न भाषा/मातृभाषा सर्वेक्षण सूची में हिंदी की उपभाषा रुप में पवारी/पोवारी यह दो पर्यायी नाम दर्ज हैं। उन्होंने हिंदी तथा उसकी उपभाषाओं का मूल प्राकृत -शैलशैनी बताया गया हैं।

३. गणेश देवी (२०१३) ने लिखा है कि महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के रहिवासी क्षत्रिय पोवार तथा भोयर पोवार जाति के लोगों की मातृभाषा पोवारी है। ''पोवार'' का कहीं कहीं ''पवार'' उच्चारण रुढ होने के कारण उनकी बोली ''पोवारी'' को ''पवारी'' भी कहा

जाता हैं, यह स्पष्ट किया हैं।

४. हेमंत कुकरेती (२०१८) ने सतपुड़ा अंचल के मध्य बालाघाट से बैतुल जिलों तक बसे पवार समाज की पवारी बोली का विविध मौखिक व वाचक लोकसाहित्य. (लोकगीत, कहावते, मुहावरे, उठाने, भजन, लोककथा आदि) का विवरण दिया है।

५. अविक गंगोपाध्याय (२०२०) ने पोवारी का भाषाई कोड (pwr) देते हुए विवरण दिया हैं कि यह बोली मध्यप्रदेश के बालाघाट, बैतुल, छिंदवाड़ा तथा सिवनी एवं महाराष्ट्र के भंडारा गोंदिया तथा वर्धा जिलों में २०११ की जनगणना/भाषा रिपोर्ट अनुसार ३२६,००० लोगों द्वारा बोली जाती हैं। उसे बी-६ असुरक्षित (en-danger) अवस्था में बताया गया हैं। यह बोली वैनगंगा पोवारी-भोयरी में ६०%-८७% कोष्टी, कुम्भारी, कलारी, से ६०%-८३% बघेली से ४९%-६५% तथा बुंदेली से ४६%-६४% समानता बताई हैं। अंत में पवारी/पोवारी का Indo-European, Endo-Iranian, Endo-Aryan भाषा परिवार में वर्गीकरण किया गया है।

संदर्भ :

१. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सनः लिंगविस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, व्हालुम १९, भाग १, (१९१६).

२. विमलेश कांति वर्माः हिंदी और उसकी उपभाषाएं (१९९५).

३. गणेश देवी : भारतीय भाषांचे लोक साहित्य - महाराष्ट्र (२०१३).

४. हेमंत कुकरेतीः भारत की लोक-संस्कृति (२०१८).

५. अविक गंगोपाध्यायः ग्लिम्सेस ऑफ इंडियन लैंग्वेजेस (२०२०).

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे, नागपुर/ मो.९०९६०८८४३६
अध्यक्ष, पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल - भारत
४४, विजयनगर, दक्षिण अंबाझरी मार्ग,
नागपुर-४४००२२
Email : dbtembhare@gmail.com